महाशिवरात्रि महत्व – शिवसंकल्प

"शिव" माना कल्याणकारी। वह हमें कल्याण की सीख देते हैं कि हम अपने परिवार के प्रति, अपने देश के प्रति कितने कल्याणकारी बने हैं। हमारे अन्दर यह गुण संकल्प से आएगा। संकल्प भी शुद्ध, श्रेष्ठ और कल्याणकारी होने चाहिए, तभी हम इस दुनिया से सभी बुराइयों का सम्पूर्ण नाश कर सकेंगे। जैसे टी.वी. सीरियल "शक्तिमान" में असुर क्या बोलते? "अंधेरा कायम रहेगा"। जो अध्यात्मवाद के दुश्मन हैं वो सत्यता को प्रत्यक्ष नहीं होने देना चाहते और भारत देश ही एक ऐसा देश है, जिसकी जान अध्यात्मवाद के अन्दर समाई हुई है। अगर हम अध्यात्म में जिएँगे, अपने जीवन का ये लक्ष्य रखेंगे तो भारत का उत्थान हो सकता है। बाकी दुनिया की कोई ताकत नहीं जो भारत का उत्थान कर सके।

तो क्या इस कलियुगी दुनिया से भ्रष्टाचार मिट सकता है? क्या भगवान को इस भारत में आना महत्वपूर्ण है? हाँ, ज़रूर है। इसलिए शास्त्रों में लिख दिया है "सम्भवामि युगे-युगे" (गीता 4/8)- मैं हर युग में आता हूँ। कब? रात्रि में। कैसी रात्रि? वो है "महाशिवरात्रि"। जैसे कि भारतीय पर्वों में शिवरात्रि का महत्व है। उस रात्रि को "महाशिवरात्रि" ही कहेंगे। शंकर रात्रि नहीं कहते। "शंकर जी" तो साकार शरीरधारी है और "शिव" है निराकार। यह महाशिवरात्रि हमें अंधकार पर प्रकाश की विजय का शुभ संदेश देती है। यह अंधकार मनुष्य में पाँच विकारों के रूप में होता है। हमें उन्हीं विकारों का, बुराइयों का नाश कर शिवरात्रि को सच्चा अर्थ देना चाहिए।

इसलिए सर्वप्रथम हम अपने-आप को जानें "मैं कौन हूँ"? "मैं इस शरीर रूपी वस्त्र में निवास करने वाली आत्मा हूँ।" आत्मा के अन्दर क्या है- ये जानें। परमात्मा भी आत्मा ही है। ये भी जानने के लिए लालसा पैदा होगी कि परमात्मा के अन्दर क्या है? आत्मा और परमात्मा का अगर पूरा ज्ञान हो तो खुशी की लहर हर मनुष्य-आत्मा के अन्दर दौड़ेगी। परिस्थितियाँ भल कैसी भी आएँ; लेकिन एकाग्रता की शक्ति से हर आत्मा अपने को खुशी में स्थिर कर सकती है। उसको कहते हैं- जीवन्मुक्ति का वरदान। जीवन रहे; लेकिन दुख अनुभव न हो। ज्ञान की ऐसी पराकाष्ठा हो जाए- जीवन रहे; लेकिन दूसरों को सुख देने का प्रयत्न करें, दुख देने का प्रयत्न न करें। जो मुख्य बात है, वो हम भूल जाते हैं कि हम किसलिए दुखी होते हैं? भारतवर्ष में जो गीता का उपदेश बहुत पुराना चला आ रहा है- "यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।" (गीता 12/15) अर्थात् वही सम्पन्न मनुष्य है जिससे दूसरे मनुष्य उद्वेग को प्राप्त न हों और वो दूसरे से उद्वेगित न हो। दूसरा कोई भले दुख देने की कोशिश करे; लेकिन वो दुखी न हो। ऐसा ही हर आत्मा को अपने को बनाना है और जो बनाने वाला है, जो सहयोग देने वाला है, आगे बढ़ाने वाला है, वह हमारा गुरू है। गुरू ही नहीं, बल्कि सद्गुरू है। आज इनकी ही आवश्यकता है और वो सद्गुरू इस सृष्टि पर आकर सब गुरुओं का भी कल्याण करता है। इसलिए गीता में लिखा है- "परित्राणाय साधूनाम्...।" (गीता 4/8) किसलिए आता है? जो भी साधु-सन्त, महान पुरुष हैं, जो भी गुरू हैं, उन सबकी रक्षा करने के लिए आता है। वो अभी इस सृष्टि पर आ चुका है।

जन्म-जन्मान्तर हमने भक्ति की है और भक्ति पूरी होती है तो भक्ति का फल देने के लिए भगवान स्वयं इस सृष्टि पर आ जाता है और बताता है कि बच्चे, अब ये पत्तों-2 को पानी देना बंद कर दो। अपनी एकाग्रता की शक्ति बढ़ाओ। मैं भी "शिव" ज्योतिर्बिन्दु का बच्चा सितारा आत्मा हूँ। जिस ज्योतिर्बिन्दु सितारे की यादगार "शिवलिंग" मंदिरों में बनाते हैं, जिसे "ज्योतिर्लिंगम्" कहा जाता है। वो शिवलिंग का पत्थर ऐसे शरीर रूपी लिंग की यादगार है, जो अपनी कर्मेन्द्रियों को भूला हुआ रहता है। जिसको हमारे भारतीय परम्परा में नाम दिया है- शंकर, "महादेव" कहा जाता है। उसका शीर्षक है "विश्वनाथ"। योगबल के आधार पर सारे विश्व के ऊपर नियंत्रण करने वाला है। उसमें परमात्मा शिव की सोल (सुप्रीम सोल) समाकर कार्य करती है; लेकिन लोग नहीं जानते कि शिव की आत्मा अलग है, जो जन्म-मरण की चक्कर में नहीं आती है, गर्भ से जन्म नहीं लेती है। शंकर लिंग नहीं कहा जाता है, शिवलिंग कहा जाता है। शंकर रात्रि नहीं कही जाती है, क्या कहा जाता है? "महाशिवरात्रि"। "शंकर जी" हमेशा ध्यानमग्न अवस्था में दिखाए गए हैं। अब ये ध्यानमग्न बैठा हुआ जो व्यक्ति दिखाया गया है, वो किसको याद कर रहा है? किसके सामने? "शिवलिंग" के सामने। ज़रूर उससे भी कोई ऊँचा है। महाशिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य को जानने के लिए संपर्क करें- आध्यात्मिक विश्वविद्यालय मो.नं. 9891370007 वेबसाइट:- WWW.PBKS.INFO Youtube-AIVV